

यागिंशं मुखमना कमावशक्यारतं ह्व खूक

50

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ यथा तत्र यत्तु विविधा ॥
नारुं नया ॥ दक्षिण दीग स ऊरु या मूर्ति कुरु विविधा ॥
लुं विविध नया चान यधिम स्व कृ. धरुं या मध्व अंगु नि २० यमान न गउ
धरुं. ॥ अं १० गम नउरु. कम्मि वि १ अं ४. कलि. वरुं. विधुन. स्वमया मा
नान हउ नि अंग नरु यक. विविध नया मध्व सहा कुरु ॥ अमम नया दिव्य
न. ए सजा गस्वा. का न गध्व क. घुघुनि. (ध्वनिक दि. हा कुरु दि. हा कुरु
नया वि. धनं दि हाउ. यरु कुरु सपा ॥ ॥ हा मो सि. स्वय सि नि यः

मित्र करि सि. नउरु सि वि वि वि. कं थ इ यु वि सि. हां मित्र कुरु सि वि वि
वि १ स इ यु वि सि. इ व वा अंगु न यमान को. पाल २ यु वि सि. न्या कं गय २
कुरु सि. स्वाव सि. नध्व अ २ सि. किन वृत्र सि. समान नया मित्र पून सि
धनं स्वा सि मित्र नय कुरु ॥ इ अंगु नि २ यमान. ध्व सि या वा कुरु कुरु
मूक २ वहाउ न ॥ ए स म नय यो दि. सनया दि. वि वा या दि. अमम नः
हि ग्वान. नवून. वि वि वि वि. स्वाय वरु क. पा नू व रु सै क स क गानः
सि स वृत्र ॥ ॥ वि कं १ अ नउ वरुं. वा नान वि कं. मदन सा हा कुरु

प्रियं, यद्गुरुं गीहृदि बलिपातये, लिखत नृपयकं जानन्येव. ॥ ५ ॥
 यामत्र लिखे ॥ ॥ दक्षजुषं वा दक्षकर्म यादि, ना, कव, धर्मिना यथा
 हाडागस्याम्युक्तं ॥ श्रीग्यामानकस्य याडाग्या ॥ अथवा जानन्यकं ग
 सा, ॥ स्यादहनसवायानं गमक ॥ वासन, नव, सिजेनव, पर्वगतनक
 गिहृद्वरुयाव, कवन, संमय, थोदा, ह्वा (थाकटगदक ग्यागुनिध
 दिग्, धर्मिना यथाहाडा, ह्वागुनिधनसत ॥ ॥ आचार्ययातहाव
 वस्तुनगि ॥ अस्याहनसगिमान ॥ गुमिस्, ग्वम, हागुशनडाकवा
 याडा, ध्यादधानं ननवर्म, ध्यादधानं, वास्तुवर्म वायाडा, आवा

८५
 यदि किं हि मुखे न, अस्मिन्, स्वभावात् ७ यादृशं न, उदाघातिदं द्वायात् ॥
 अथवा उदाघातिदं, स्वभावात् नयनकाशं वा ॥ अथवा पूरितं नयनं
 यादृशं वा ॥ अगि कारनं रुयं कनमनया उदाघातिदं वा ॥ सा मा मदनशा, व
 र्त्तमानं, ॥ क० वनाया वा सहा कृध उदयकं ग० ॥ भवनाशकं गी, भवय
 रुत्थं, अग्निधायनं गी भवनाशकं रुत्थं, स्वभावात् लाहा मरुतनय रुत्थं धनया ॥
 स्वभावात् रुत्थं मरुतन, कृध उदयकं ग० ॥ कारकं रुत्थं, चिकनाकान, वरुन कृत्तकान ॥
 नियमं रुत्थं निविहान, ददां गुलका, वदिनिगरी, कारकं वरु, चिकना, स्वभा
 वात् लाहा मरुतन, कृध उदयकं ग० ॥ कारकं रुत्थं, चिकनाकान, वरुन कृत्तकान ॥

[illegible][illegible]

सूना सुनाया गं नाय वा न नो य वा नो काडा, डाडा न डाडा, अग्निश्च
ता इति विथ ॥ यं लाघी उत ॥ थ मू ल्या दि प्र च स त्वया, स द्ध म स स
स विघ्न या क म्मः, अ क् सर्व द्ध व, वे वि स क ल्य (अथ म ले न क, र म्म श स्य
विधं स न न रु य मा न ॥ उ स च ए क् अ मू क मा न य रु उ अग्नि द व ता स यः
विवा गो यं वा धि व का य स्वा हा ॥ स मी ध इ य गु वि म लु स उ (थं ग न मा न ॥ वृ हि
या म लु उ थं ॥ स मी ध यं उ थं ॥ वा धि व क या रु ल, या हा गु वि का म ना

पू न य शं उ अ वा धि व क मं अ या ग ॥ वा धि व क मं अ ॥ न स व रु क, न
अं स कं ल्यं मू उ र, वृ हि जा ग, वा हा गि स ॥ कृ त वा सा ॥ स उ सि न स ॥
म व ता रु ल उ थं ॥ पू ज पृ था दि पू ज उ थं स क र्ता या ॥ उ अग्नि द व ता स
प वि वा न य थं उ गि क् स्वा हा का ट क्रि या च रु ॥ थ न स क न र्म न मा न ॥
क्रा ष ॥ ला क ध न अग्नि व म्म पू ज अग्नि वा ज, ट किं वा ज या अग्नि र्थं धी धि
गु डा ध ट प हा न, कृ त स क ल्यं र म्म या क म्म, रु य रु अग्नि न, म को र
ध जा धि अग्नि द व ता हा या या वि वा स ता र म्म, स म्म न द व रु क

अग्निहोत्रपात्र, जिमिसंनद्वियागुनिनयगुनिकर्मकं याडा, अग्नि
 लोकरुवा॥ ३० ॥ अग्नेयं स्वाहा॥ ३१ ॥ पार्वीगडा, १ पार्वीगडा, घनद्वियागुनि
 कृयकं॥ ३२ ॥ अग्निदवतासपत्रिवात्र, थडा २ नूय, थमिहडागुनिननूय
 रुवडा, थमिअग्निया॥ ॥ थनहं नूकयागुनि॥ ॥ गुनिनं अग्नियावा
 थस, हं नूकयागुनि, गुनिनं अग्निदवतासपत्रिवात्र, कृयकं सहीहं नू
 क॥ ॥ समवादेयस, अग्नियाहं दयसहीहं नूकयासमलुलनयाडा
 याय॥ ॥ अग्निनं अग्निहं याडावाहयुनिमथ सहीहं नूकयासम

का २

समलुलनयाडा, याग॥ अग्निहं नूकयागुनिनं, सिउजाति
 मिहं याडावाहयुनिदथसं अग्निहं नूकयागुनिनं, पयहं नूकयागुनिनं
 हीहं नूकयासमलुलनयागुनि, अग्निहं नूकयागुनिनं, जायायाथ
 सुवासुनायागुनि, लाडाउथं माग, वाधिगुदान, घननय, ३ याग १ पान
 रुगवान्ही ३ हं नूकया, मसहं काव, ॥ ३० ॥ वरुहं २ नूक ०० यादिमनु॥
 ३० नमः समकवृक्षानां हव्यकव्यवाहनाय अदिव्य॥ मं वनाया कही

[illegible][illegible]

आमलका लवणम् । विषादादि ननु प्रकृतं ।
 काउ। पुनिष्ठा धनायाय॥ रुतं जलनं पूजा स्थापना यत्न रुतं अर्थ आवस्य
 अनविश्वरूपः॥













10

[illegible]

(नमो भगवते वासुदेवाय)
यद्गुरुपाय
दमनात्तद्विद्वान्
पुष्टजागृत्वा
कान्तगर्धक
युद्धन
॥ क्षमगिर्कहि
(होक्कृत्वाहि
धर्मद्विद्वान्पाय

(होमाय
खेयगति
निपयि
मित्रकथिनि
(तत्तु नमि००० एषादिन, कथ
इदृशुनिधि
० मित्र
कुसि००० एषादिन, प २३
सि पात्रशुनिधि
(नार्कगप २ क्षकनि
खुच्चि

(नमो भगवते वासुदेवाय)
यद्गुरुपाय
दमनात्तद्विद्वान्
पुष्टजागृत्वा
कान्तगर्धक
युद्धन
॥ क्षमगिर्कहि
(होक्कृत्वाहि
धर्मद्विद्वान्पाय

(होमाय
खेयगति
निपयि
मित्रकथिनि
(तत्तु नमि००० एषादिन, कथ
इदृशुनिधि
० मित्र
कुसि००० एषादिन, प २३
सि पात्रशुनिधि
(नार्कगप २ क्षकनि
खुच्चि

(होमाय
खेयगति
निपयि
मित्रकथिनि
(तत्तु नमि००० एषादिन, कथ
इदृशुनिधि
० मित्र
कुसि००० एषादिन, प २३
सि पात्रशुनिधि
(नार्कगप २ क्षकनि
खुच्चि